ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 194-196

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

# बैंककर्मी महिला और कोविद 19: चुनौती और संघर्ष के परिप्रेक्ष्य में

सुजाता सुधा

शोध अध्येत्री– समाजशास्त्र विभाग, रांची विश्वविद्यालय, रांची (झारखण्ड) भारत

Received-08.08.2022, Revised-14.08.2022, Accepted-17.08.2022 E-mail: sujatasudha84@gmail.com

***सारांश:–*** *कोरोना वाइरस एक आपदा है। जिससे दुनिया के लगभग सभी देश प्रभावित हुए। यह न केवल बड़ी संख्या मे मौतों का कारण बनीं जबकि इसने पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव डाला। वस्तुतः कोरोना वाइरस ने समाज के लगभग सभी हिस्से को प्रभावित किया चाहे वो आर्थिक हो, प्रशासनिक हो, धार्मिक हो अथवा सामाजिक। इसके कारण आर्थिक रूप से देश की स्थिति तो बिगड़ी ही साथ ही कई प्रकार के सामाजिक समस्या में वद्धि हुई और नई समस्याओं ने पदार्पण भी किया। इस महामारी मे देश की अर्थव्यवस्था के साथ– साथ समाज पर भी प्रतिकूल और नकारात्मक प्रभाव पड़ा। समाज मे अपराध, तनाव,घरेलू हिंसा, महिलाओ के प्रति अपराध, विवाह संबंध में तनाव आदि जैसे सामाजिक समस्या मे वृद्धि दृष्टिगोजार हुई। अगर समाज को लिंग के आधार पर अध्ययन करें तो ज्ञात होता है कि पुरुषों की तुलना में महिलाओं पर इसका सामाजिक रूप से नकारात्मक प्रभाव तुलनात्मक रूप से ज्यादा पड़ा। जबकि आकड़ें बताते है कि महिलाओं पर कोरोना का असर तुलनात्मक रूप से पुरुषों की तुलना मे कम भी रहा। इसका कारण –यूनिवर्सिटी ऑफ ईस्ट एंगलिया में प्रोफेसर पॉल हंटर कहते हैं, "महिलाओं में आंतरिक रूप से पुरुषों से अलग प्रतिरक्षा प्रतिक्रियाएं होती हैं। ये अलग बात है कि प्रतिरोधक प्रतिक्रिया का गुण न केवल स्वास्थ्य के लिए पुरुषों से बेहतर है बल्कि मानसिक तनाव मे भी ये उनसे कही ज्यादा सक्षम और मजबूत होती दिखी कोरोना काल में। वर्तमान परिस्थिति में सभी सेक्टर मे कोरोना के कारण दबाब बढ़ा जिससे बैंक भी अछूता नहीं रहा। बैंक के माध्यम से ही सरकार की सभी योजनाओं का लाभ आम जनता को सीधे मिल पाता है इसलिए कोरोनाकाल मे बैंक ही जनता और सरकार के बीच की कड़ी बनी। यह सर्वविदित है की भारतीय बैंक मे कर्मचारी और काम का औसत संतोषजनक नहीं है। पहले से ही लगभग सभी सरकारी बैंक मे कर्मचारी अत्यधिक काम का दबाब महसूस कर रहे थे। ऐसे में ये कोरोना बैंककर्मी के लिए एक समस्या बन गई जिसमें महिला बैंक कर्मी पर तो दोतरफा मार हो गई मसलन काम का दबाब तो बढ़ ही गया साथ ही पारिवारिक जीवन में भी अतिरिक्त जिम्मेदारी का निर्वहन करना पड़ा। दूसरे शब्दों में संघर्ष अब सामाजिक और आर्थिक दोनों ही रूपों में और ज्यादा चुनौतीपूर्ण हो गया। हम सबने देखा कि है कि कोरोना काल में सभी आवश्यक सेवा ने अपने कार्य के लिए प्रतिबद्धता दिखाई जिसमें स्वास्थ, सेवा, बैंक, प्रशासन और अन्य अग्रणी रहें।*

***कुंजीभूत शब्द– अर्थव्यवस्था, कोरोना वाइरस, प्रशासनिक, आर्थिक रूप, सामाजिक समस्या,महामारी, सरकारी योजना।***

**बैंकिंग और महिला –** भारत एक विकासशील अर्थव्यवस्था है। जिसमें बैंक इस अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है।वर्तमान में, भारत में 28 से अधिक बैंक हैं, जिनमें राष्ट्रीय सार्वजनिक और निजी क्षेत्र शामिल हैं। हालाँकि, अगर अनुसूचित शहरी सहकारी बैंक और विदेशी बैंक को भी इनमें जोड़ा जाता है, तो इनकी कुल संख्या 100 से अधिक हो जाती है। बैंक में लगभग 13.50 लाख कर्मचारी देश के विभिन्न भागों में कार्यरत हैं। यदि लिंग के आधार पर औसत निकाला जाए तो महिला का हिस्सा लगभग 20 प्रतिशत से ज्यादाहै। इससे यह ज्ञात होता है कि कामगार महिला का एक बड़ा हिस्सा बैंकिंग सेक्टर से जुड़ा हुआ है। इसलिए कोरोनकाल मे अगर सामाजिक समस्या अथवा प्रभाव का अध्ययन महिला के संदर्भ में किया जाएगा तो स्वाभाविक रूप से बैंकिंग से जुड़ी महिला का अध्ययन करनाही पड़ेगा। चूकि बैंक का कामकाज ऐसा है कि इन्हे ग्राहक के सीधे संपर्क में आना ही पड़ता है जिसके कारण दुर्भाग्यवश उन्हें कोरोनाकाल में वाइरस के सीधे संपर्क मे आना पड़ा। जिसके वजह से लगभग 1200 से ज्यादा बैंककर्मी का देहांत भी कोरोनाकाल में हो गया। जिसमें महिला भी बड़े तादात में थी। कुल संख्या में मौत का प्रतिशत 0.10 प्रतिशत रही। बैंक कर्मी से जुड़े परिवार के लिए यह आजीवन की हानि रही। जबकि समाज में बैंककर्मी को काम के अनुरूप उचित सम्मान भी प्राप्त ना हो सका। जिसका प्रमाण ये है कि कई राज्यों में प्रारंभ में ट्रेन में बैठ कर कार्यस्थल पर भी जाने का अधिकार ये कहकर नहीं दिया गया कि वो अतिआवश्यक सेवा में नहीं आते हैं। इन्हे फ्रन्ट लाइन स्टाफ तो माना गया पर वैक्सीन देने में भी प्राथमिकता नहीं दी गई। कहने से तात्पर्य है कि ये बैंककर्मी समाज का वो हिस्सा रहा जो प्रत्यक्ष रूप से देश की सेवा करता रहा पर इसके महत्व को सही से समझा नहीं गया।

**बैंक मे कोरोनकाल मे कामकाज –** भारत की यदि बात करे तो कोरोना की पहली लहर मे ही इसे महामारी समझ कर प्रारंभ से ही कई कदम उठाए गए जिसमें सभी संस्थाओ को या तो बंद कर दिया गया या "वर्क फर्म होम" किया गया। साथ ही अति आवश्यक सेवाओं कोकुछ शर्तों के साथ खुला रखा गया। इसके अंतर्गत बैंक की सेवा को आवश्यक माना

**अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

गया और खुला रखा गया। प्रारंभ में इसकी ग्राहक के लिए सेवा सीमित की गई बाद में सामान्य कर दिया गया। इस प्रकार बैंक कर्मचारी को पूर्व निर्धारित तय सीमा पर ही कार्यालय जाना पड़ा। ये सत्य है की कई राज्य ने कर्मचारी की संख्या 25 या 50 पर्सेन्ट रखने का आदेश दिया पर कर्मचारी की संख्या कम होने के कारण ये पूरी तरह से सफल नहीं हो सका। चूकि बैंक में स्थानतरण एक सामान्य प्रक्रिया है जोकि महिलाओ पर भी लागू पुरुषों की भाति ही होता है। अगर हम महिलाओ के पोस्टिंग और होम प्लेस को देखें तो कुछ उदाहरण को छोड दें तो प्रायः उनकी पोस्टिंग घर से दूर ही होती है। बैंक में औसत काम और कर्मचारी के बीच का अंतर पहले से ही काफी ज्यादा है जिसके वजह से स्थानतारण पॉलिसी के साथ–साथ काम का भी अत्यधिक दबाब को झेलना पड़ता है।

जिसके कारण उनके बैंक जाने का समय तो तय होता है पर आने का समय नहीं। चूकि भारतीय समाज मे महिला की नौकरी को उतनी प्राथमिकता नहीं दी जाती है जितनी पुरुषों की। महिला का पारिवारिक जिम्मेदारी का निर्वहन करना ही उसका प्राथमिक दायित्व माना गया है। इस प्रकार महिला अगर कामकाजी है तो उसे काम के साथ–साथ पारिवारिक दायित्व भी प्राथमिक स्तर पर निभाना पड़ता है। इस दोतरफा जिम्मेदारी के बाद यदि महिला अपने परिवार से दूर रहे तो स्थिति भयानक हो जाती है जिसे ब्यक्त भी नहीं किया जा सकता है। हम बैंक मे कार्यरत महिला के कामकाजी और पारिवारिक जिम्मेदारी को अलग – अलग वर्गीकृत करेंगे फिर उसकी कोरोना महामारी काल मे इनके समक्ष चुनौती को बहतेर तरीके से समझ पाएंगे।

1. कई महिला के बच्चे छोटे होते है ऐसे मे इनके छोटे बच्चे को या तो घर मे मैड के पासया फिर day Caregkse मे रहते है। जिनकेबच्चे स्कूल जाते है उनको परिवार का कोई दूसरा सदस्य बच्चे का देखभाल उनके साथ रहकर करते है या फिर उनको अपने साथ रखकर करते है। पर इनकी संख्या कम है। जब इस महामारी मे सभी स्कूल, कॉलेज बंद हो गए और साथ ही बच्चों के रखने की जगह अर्थात day Care भी बंद हो गए तो उन्हे अपने बच्चों को रखने मे गंभीर संकट का सामना करना पड़ा। कई ऐसे उदाहरण है जिसमे महिला ने अपने बच्चों को घर मे अकेला बंद कर बैंक में काम किया। चूकि आपदा कानून के अंतर्गत बैंक से छुट्टी मिलना सहज नहीं था ऐसे में इनके पास ये एकमात्र विकल्प था। ये एक प्रकार का गंभीर संकट का दौर था एक माँ के लिए। ये अनुमान लगाना भी मुस्किल है कि वो किस प्रकार के मानसिक तनाव से गुजर रही होगी। दूसरे शब्दों मे कोई ये जान भी नहीं पाता है कि बैंक मे सामने बैठी महिला अपने काम के प्रति कितनी समर्पित और ईमानदार होती है। वो जाने कितने तरह की हरदिन के जीवन में चुनौती का सामना कर अपने कार्य को कर रही थी। जबकि हमने देखा है कि लगातार इस महामारी काल मे कोरोना वरीयर को सरकार, विज्ञापन तथा समाज में सम्मान मिल रहा था पर इस सम्मान मे बैंक कर्मी महिला अथवा पुरुष को न तो नाम लिया जा रहा था न ही सम्मान दिया जा रहा था ।
2. कई बार महिला को work from Home भी बैंक के द्वारा दिया जाता रह था पर उसमे भी एक नई तरह की समस्या होती है कि आखिर वो कैसे अनलाइन भी करे। उसके घर मे रहने से बच्चे तथा परिवार को भी घर मे होने से काफी उमीद बढ़ गई। चूकि कोरोनाकाल में घर के बाकी लोग भी वर्क फर्म होम होते थे या फिर घर पर ही थे ऐसे समय मे बैंक कर्मी महिला से उम्मीद और बढ़ गई। इस तरह उसका घर मे बैंक का काम करना सहज नहीं रहा। ये एक प्रकार का चुनौती था महिला का घर में रहकर बैंक का काम करना।
3 अगर महिला को एक सामाजिक प्राणी समझ कर अध्ययन किया जाए तो हमे ये मानना होगा कि उसको भी बाकी घरेलू महिला की तरह अपने पारिवारिक जिम्मेदारी से लगाव होता है वो भी इनके साथ समय बिताना चाहती है। जबकि दूसरी तरफ येभी बहुत महत्वपूर्ण है कि कोरोना मे लोगों को एक प्रकार का मौत को लेकर भय भी रहा जो इनके अंदर होना स्वाभाविक था। इस काल मे परिवार के ज्यादातर लोग घर पर ही थे ऐसे मे महिला को अपनी असक्षमत का आभस होता रहा होगा जो इनको मानसिक तनाव देता होगा।
4. महिला और उसके पति की पोस्टिंग प्रायः साथ नहीं होती ऐसे मे पूरे परिवार मे असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। जहां एक और महिला कोरोना काल मे बढ़ती जिम्मेदारी को देखते हुए अपना ख्याल नहीं रख पा रही थी वही दूसरी और परिवार भी इस संकट काल मे साथ नहीं था। कोरोनकाल मे ऐसे कई महिलाओ की दशा सामने आई जिसमे वो कहीं और बच्चे कहीं और थे और महामारी के काल में वो अपने मातृत्व के दायित्व का निर्वहन भी नहीं कर पाई।
5. सरकार ने परिस्थिति को देखते हुई दुकानों की खुलने की सीमा निश्चित कर दी थी। यही सीमा बैंक के लिए भी निर्धारित कर दी गई। विडम्बना एसी रही कई बार वो तय समय में समान नहीं खरीद पा रही थी। जबकि कई बैंक कर्मी कामकाजी महिला घर और बैंक दोनों वो अकेले कर रही थी। ऐसे में समान नहीं मिल पाना भी एक चुनौती जैसा रहा।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

बैंक के काम काज मे कम के समय बाहर जाकर समान खरीदने की गुंजाइस कम हो पाती है। क्यूकि एक तो स्टाफ का कम होना साथ ही पैसे से जुडा होना। महिला कर्मी के लिए कोई विशेष प्रावधान भी नहीं रखा गया जो एक रोजमर्रा की समस्या बन गई थी।

6. कोरोनाकाल में देश की बहुत बड़ी जनसंख्या जो गरीबों की थी उनकी स्थिति बद्तर हो गई। लगातार बंदीकी स्थिति ने उन्हे भूखे रहने के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया। कुछ ऐसे क्षेत्र रहे जिनकी हालत बद्तर हो गई जिसमे होटल उद्योग, ट्रैवल उद्योग, सौन्दर्य प्रसाधन से जुडा उद्योग, रीटेल सेक्टर, फुटकर विक्रेता और ऐसे कई और सेक्टर रहे। गरीबों में भुखमरी की हालात पैदा हो गए। तब सरकार ने कई प्रकार की सामाजिक कलायंकारी योजना चलाई जिसका उद्देश्य था गरीबों तक सही समय तक अनाज और पैसा पहुच जाए। जिसमें गरीब महिला के खाते में 500 रुपया देना, या फिर बूढ़ों विकलांग लोगों के लिए भी कई योजनाओ के अंतर्गत पैसा देना। जिसका क्रियनवायन बैंक से ही संभव था। यह कोरोना काल की गंभीर परिस्थितियों से निपटने का एक मात्र विकल्प था। ऐसे मे बैंक के समाज तथा देश के प्रति और जिम्मेदारी और बढ़ गई। कई ऐसे भी बैंक की शाखा रही जिसमे कोरोन काल मे हजारों की भीड़ भी जमा हो गई। देश और अपने बैंक के प्रति महिलाओ ने भी अपने कर्तव्य का निर्वहन किया। यह संक्रामक बीमारी है इसे जानते हुए भी इन्होंने बड़ी मेहनत और काबलियत के साथ सरकार इस दूरदर्शी सामाजिक कल्याणकारी योजना को सफल कर दिया। जबकि इन्हे जरूरी सुरक्षा भी कई शाखा में पुलिश नहीं दे पाई। देश में कोरोना के कारण रुग्ण पड़े उद्योग को पुनर्जीवित करने के लिए बैंक को ही सरकार ने माध्यम बनाया। इसलिए भारत सरकार ने इन रुग्ण उद्योग को चलाने के लिए कई रियायती ऋण का प्रपबधान किया जिसका क्रियान्वयन बैंक ने ही किया। यह वो दौर रहा जहा बैंक ही देश के लोगों की दुर्दशा को ठीक करने के लिए एकमात्र विकल्परही। इस संकटकालीन स्थिति में बैंक ने कम मानव संसाधन में अतिरिक्त काम के दवाब के साथ सारे सरकारी योजनाओ का सफलतापूर्वक निर्वहन किया जिसमें महिला भी सहभागी रही।
7. महिला अगर बैंक मे उच्च पद पर हो तो उसकी जिम्मेदारी इस समय और बढ़ गई साथ ही इससे उसका पारिवारिक जीवन भी प्रभावित होने लगा। जो घर से दूर रहती है वो अपने परिवार से नहीं मिल पाई। ऐसे मे इनका पारिवारिक जीवन तो प्रभावित हो ही रहा है साथ ही स्वास्थ्य संबंधी समस्या भी उत्पन्न हो रही है।

**सारांश –** विश्व एक गंभीर आर्थिक संकट से गुजर रहा है। हजारों मौत हर दिन हो रही है। जबकि कोरोना महामारी के लगभग 2 साल हो गए। हमारा देश भी आर्थिक बदहाली झेल रहा है। आने वाले दिनों मे और भी चुनौतियाँ बैंक के सामने आने वाले हैं। अब तक के प्रयास सराहनीय रहें। जिसका श्रेय बैंक कर्मचारी को ही जाता है। जिसमें महिला बैंक कर्मी का योगदान सहरानीय रहा। जबकि ये भी अकाट्य सत्य है कि महिला और पुरुष की सामाजिक परिस्थिति एक समान नहीं होती है। इसलिए इस विषम समय मे बैंक कर्मी महिला का अपने कर्तव्य और परिवार के बीच संतुलन रखना एक चुनौती और लंबा मौन संघर्ष रहा । इनकी यह तपस्या और हर दिन का संघर्ष न तो समाज का आकर्षण बन पाता है न ही परिवार मे उसके बलिदान को उचित सम्मान मिल पाता है। ये समय सीमा क्या होगी ये कहना मुस्किल है पर इस समय ये जो कामकाजी बैंककर्मी महिला है उनकी पीड़ा भी सामान्य नहीं है। देश और बैंक को चाहिए की इनके बारें मे सोचे और इस महामारी काल मे कम से कम इनको परिवार के साथ रहने के लिए लचीला स्थानतरण नियम लाए। जिससे ये भी मानसिक तनाव को काम कर सकें। ऐसे ये नारी है इसलिए वो इस उपेक्षा मे भी अपने दायित्व का निर्वहन कर राष्ट्र को इस आर्थिक आपदा से निकालने के लिए कृतसंकल्प रहेंगी।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Coronavirus (COVID-1) : Impact on Indian Business and Economy 30 अप्रैल 2020.
2. Gender and COVID-19 (Coronavirus) वर्ल्ड बैंक रिपोर्ट 10 अप्रैल 2010.
3. New measures are needed to safeguard women*s economic opportunities during COVID&19 सेटेमबेर 2020.
4. "ArcGIS Dashboards" (अंग्रेजी भाषा में). मूल से 29 जनवरी 2020 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 9 मई 2020.
5 A BusinessStandard :आनिर्बन नाग Last Updated at May 16, 2021 06:41-IST:

*****